Hindi A: literature – Standard level – Paper 1
Hindi A : littérature – Niveau moyen – Épreuve 1
Hindi A: literatura – Nivel medio – Prueba 1

Wednesday 10 May 2017 (afternoon)
Mercredi 10 mai 2017 (après-midi)
Miércoles 10 de mayo de 2017 (tarde)

1 hour 30 minutes / 1 heure 30 minutes / 1 hora 30 minutos

Instructions to candidates

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a guided literary analysis on one passage only. In your answer you must address both of the guiding questions provided.
- The maximum mark for this examination paper is **[20 marks]**.

Instructions destinées aux candidats

- N’ouvrez pas cette épreuve avant d’y être autorisé(e).
- Rédigez une analyse littéraire dirigée d’un seul des passages. Les deux questions d’orientation fournies doivent être traitées dans votre réponse.
- Le nombre maximum de points pour cette épreuve d’examen est de **[20 points]**.

Instrucciones para los alumnos

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un análisis literario guiado sobre un solo pasaje. Debe abordar las dos preguntas de orientación en su respuesta.
- La puntuación máxima para esta prueba de examen es **[20 puntos]**.

5 pages/páginas

2217 – 0095

© International Baccalaureate Organization 2017

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (1) तथा (2)। इन दोनों में से किसी **एक** पर साहित्यिक व्याख्या लिखिए। अपने उत्तर में आप दिए गए दोनों सहायक प्रश्नों का समावेश करें।

1.

कटी पतंग

आकाश रंग-बिरंगी पतंगों से भरा पड़ा था जो कि कई बार एक दूसरे में उलझते-उलझते बच जाती तो कभी एक दम से बल खा कर डगमगा जाती। हर पतंग उड़ानेवाला एक दूसरे की पतंग काटने पर लगा था। आकाश में मानो कोई मेला लगा हो। सबकी नजर एक बहुत ऊँचाई पर उड़ने वाली एक सुन्दर सी आसमानी रंग की पतंग पर थी कि उसे काटें और फिर दबोच कर पकड़ लें। यह सारा दृश्य उर्वशी छत पर खड़ी काफ़ी देर से देख रही थी। धीरज किसी तरह भी उर्वशी की भावनाओं को समझ न पाता। जिस इंसान के हाथ बहुत विश्वास से उसने अपने जीवन की डोर दी थी वो उसे एक दिन भी ढंग से न संभाल कर रख सका। तभी वह आसमानी पतंग जैसे ही कटी सब ओर शोर सुनाई देने लगा और वह कटकर ऊँचाई से लहराते-लहराते एक बहुत ऊँचे पेड़ पर आकर अटक गई। उर्वशी दिन रात एक ही प्रार्थना करती कि भगवान काश उसकी कहीं नौकरी लगवा दे। इस बारे में एक बार उसने अपने पिता से बात की तो उन्होंने अपने एक जान पहचान वाले के स्कूल में उसकी नौकरी लगवा दी। उसके पिता जी ने उसे फोन करके सूचना दी, “उर्वशी, मकंदपुर में मेरे एक परिचित ने नया स्कूल खोला है वहाँ पर तुम्हारी नौकरी की बात मैंने कर ली है और वह जगह तुम्हारे घर से नजदीक भी पड़ेगी उसके लिए तुम मेरी लूना* ले जाओ, तुम्हें आने जाने में दिक्कत नहीं होगी।” उर्वशी की ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं था। वहाँ पर जाकर उर्वशी ने सारी बात पक्की कर ली और अगले दिन से ही काम पर आने की बात और वेतन दो हज़ार निश्चित हो गया। उर्वशी को चैन की साँस मिली कि चलो कुछ देर तो वह घर से बाहर शांति के बिता सकेगी। वह सुबह घर का सारा काम जल्दी उठ कर निबटा लेती। बचपन की उसकी कुछ कर दिखाने की इच्छा और समाज में अपनी पहचान बनाने की इच्छा फिर बलवती हो गई। बस, उसे लगता कि भगवान उसे एक मौका दे दे तो वह फिर पीछे मुड़ कर नहीं देखेगी। उसने जब यह बात धीरज को बताई तो उसके भावहीन चेहरे पर कोई भाव नहीं आए। उसकी नीरस प्रवृति से वह अच्छी तरह वाकिफ हो गई थी, इसलिए किसी तरह की प्रतिक्रिया की उसे कोई उम्मीद भी नहीं थी। सैंट जेवियर स्कूल की यह नई ब्रांच खुली थी। जहाँ पर उसे दूसरी कक्षा के बच्चों को पढ़ाना था। उर्वशी बहुत मेहनती थी उसने अपनी तरफ से स्कूल की उम्मीदों पर खरा उतरने की पूरी कोशिश की। एक दिन स्कूल के प्रिंसिपल ने उसे अपने कक्ष में बुलाया और कहने लगे, “उर्वशी, बच्चों द्वारा तुम्हारी शिकायतें आ रही हैं कि तुम उनसे इंग्लिश में बात नहीं करती हो। तुम्हें पता है कि हमारे कानवेंट स्कूलों में हिंदी में बात करने की सख्त मनाही है।” उर्वशी अपनी सफाई देते हुए बोली, “नहीं सर, मैं तो इंग्लिश में ही बात करती हूँ, जिस तरह से आपके स्कूल की दूसरी टीचर्स करती हैं बल्कि मैं तो उनसे भी अच्छी इंग्लिश बोल सकती हूँ। आपने तो मेरा एकेडेमिक रिकार्ड देखा है कि बाकी सभी टीचर्स के मुकाबले मेरे अंक हर सब्जेक्ट में ज्यादा है।”

प्रिंसिपल, “देखो उर्वशी, मैं बच्चों की शिकायत को नजर अंदाज नहीं कर सकता क्योंकि अगर इनके माता-पिता तक यह बात पहुँची तो स्कूल का नाम खराब होगा। हाँ, अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारा साथ दे सकता हूँ अगर...” ऐसा कहते-कहते प्रिंसिपल उसके पास आकर खड़े हो गए। उर्वशी की समझ में कुछ नहीं आया तो वह जल्दी से कमरे से बाहर निकल गई और स्टाफ रूम में जाकर बैठ गई। अगर वह घर जल्दी जाती है तो पति और सास के ताने सुनने को मिलते। उसका दिमाग सुन्न-सा हो गया। कुछ देर बाद अपने को थोड़ा संभाल कर वह भारी क़दमों से घर पहुँच गई। बिन किसी से कुछ कहे वह अपने कमरे में जाकर बिस्तर पर लेट गई। बरबस ही उसकी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। उसके पति कमरे में आकर उसे ताने मारने लगे पर जैसे उसके कानों तक कोई बात पहुँच ही नहीं रही थी। मानो उसका शरीर पत्थर का हो गया हो। धीरज के साथ कोई भी बात करने का कोई फायदा नहीं था क्योंकि न तो उसने उसे कभी समझा था न ही कोशिश की थी। स्कूल छोड़ने की बात वह उसे कैसे कहती यही विचार बार-बार उसके मन में खलबली मचा रहे थे। एक तरफ कुआं था तो दूसरी तरफ गहरी खाई थी। उसकी किस्मत यहाँ भी उसे मात दे रही थी। भारी मन से आखिर उसने धीरज को कह ही दिया, “धीरज, मैंने वह नौकरी छोड़ दी है क्योंकि हर रोज स्कूल में 4 बजे तक रुकना पड़ता हैं और अब तो शाम की कक्षाएँ भी शुरू हो रही हैं तो मैं अपनी बच्ची को इतनी देर नजर अंदाज नहीं कर सकती।” आकाश साफ-सुथरा दिख रहा था, तभी अचानक कहीं से रेत भरा अंधड़ आने लगा। देखते-देखते सारा आकाश काला भूरा हो गया। पतंग उड़ाने वाले कहीं और चले गए, मगर वह पतंग आसमान की ऊँचाइयों को छूने लगी और कहीं दूर जाकर एक बड़े बरगद के पेड़ की शाखा पर अटक गई। उर्वशी वापिस अपने घर की तरफ मुड़ गई। गली में ‘पकड़ो-पकड़ो’ का शोरगुल सुनकर अचानक उर्वशी की तन्द्रा भंग हुई तो उसने देखा सब लोग उस आसमानी रंग की पतंग के पीछे भाग रहे हैं और वह पतंग गली के एक बिजली के खम्बे पर आकर अटक गई। वहाँ बहुत से लड़के उस पतंग को उतारने की कोशिश में थे। परन्तु उस लड़के ने अपनी सहनशीलता और अदम्य साहस का परिचय देते हुए बड़ी खूबसूरती से उस पतंग को उतार लिया और उसे लेकर तेजी से अपने घर की तरफ भागा। सब बच्चे उसका मुँह देखते रह गए। वह भागता रहा जब तक कि वह उसे अपने घर के अंदर सुरक्षित नहीं ले गया। वह अपनी इस प्राप्ति पर बहुत खुश था। वह पतंग धीरे-धीरे उसकी कमजोरी बन गई। वह जब भी वह पतंग उड़ाने लगता तो उसे उसके कट जाने का डर फिर सताने लगता कि पता नहीं अगर इस बार यह पतंग कट गई तो इसकी क्या दुर्दशा होगी और उसने फिर उस पतंग को उड़ाना ही छोड़ दिया। वह उस पतंग को बड़े प्यार से अपने पास संभाल कर रखता।

अलका सोनी, अर्गला (2012)

---

* लूना: एक प्रकार का वाहन (स्कूटर)

(क) कहानी में प्रस्तुत कथानायक ‘उर्वशी’ के चरित्र और मनोभावों की व्याख्या कीजिए।

(ख) लेखिका द्वारा कहानी कहने के ढंग और पाठक पर कहानी के प्रभाव की समीक्षा कीजिए।

2.

माँ अब मैं बोलूँगी।

माँ मैं जब पैदा हुई, तुम बहुत खुश हुई
तुम्हीं ने मुझे पहला शब्द
माँ बोलना सिखाया।
थोड़ी बड़ी हुई भीड़ देखकर
डरने लगी तुम आगे आई
मेरा हाथ पकड़कर लोगों से मिलना सिखाया
तुम्हीं ने मुझे कविता बोलना सिखाया
पर अचानक क्या हुआ
कि तुम्हीं ने मुझे कहना शुरू कर दिया
अब बड़ी हो गई हो कम बोला करो
माँ तुमने मेरे शब्दों को मूक कर दिया
फिर तुम कहने लगी
तुम्हें पराए घर जाना है
माँ तुम सही थी यह पराया ही घर है
आज माँ मैं खामोश हूँ
शब्दहीन हूँ, लाचार हूँ
खामोशी ही मेरी जुबाँ बन गई है
आज पता चला कि
जिस परछाई से मैं बचपन में डरती थी
आज वह परछाई मेरी हमसफर बन गई है
सब कुछ है माँ
दुनियादारी के हिसाब से मैं खुश हूँ
नहीं है तो इज्ज़त, आदर, सम्मान
जिसकी जरूरत मुझे अभी साँसों से ज्यादा अनुभव होती है।
माँ पर आज मैं खामोश
नहीं रहूँगी सीख लिया है जवाब देना
कभी-कभी नहीं को भी स्वीकार करूँगी
हाँ को मौन स्वीकृति नहीं बनने दूँगी
अपने कल्पना के पंखों को फैलाकर
माँ मैं धीरे-धीरे अब उड़ना सीखूंगी।

डॉ विनीता मेहता, साहित्य मंजरी (2015)

(क) कविता के शीर्षक पर अपने विचार प्रकट कीजिए और बताइए कि पाठकों को प्रभावित करने में यह शीर्षक कहाँ तक सफल है ?

(ख) कविता की संरचना और भाषा शिल्प के माध्यम से कवि ने आपको कैसे प्रभावित किया है ?